MODEL PAPER – 4

- परीक्षार्थियों के लिये निर्देश MODEL PAPER – 1 के समान होगा।

खण्ड–अ (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

प्रश्न संख्या 1 से 100 तक के प्रत्येक वस्तुनिष्ठ प्रश्न के साथ चार विकल्प दिये गए हैं, जिनमें से कोई एक सही है। इन 100 प्रश्नों में से किन्हीं 50 प्रश्नों के अपने द्वारा चुने गए सही विकल्प को OMR उत्तर-पत्रक पर चिह्नित करें। 50 × 1 = 50

1. ''नारी और नर एक ही द्रव्य की ढली दो प्रतिमाएँ हैं।'' किस पठित पाठ की उक्ति है ?
(A) ओ सदानीरा (B) सिपाही की माँ
(C) शिक्षा (D) अर्धनारीश्वर

2. जे॰ कृष्णमूर्ति की रचना कैसी है ?
(A) अर्थशास्त्र (B) तर्कशास्त्र
(C) शिक्षाशास्त्र (D) चिकित्सा शास्त्र

3. 'जूठन' क्या है ?
(A) आत्मकथा (B) आलोचना (C) एकांकी (D) कहानी

4. 'ईद का चांद होना' मुहावरे का अर्थ क्या होगा ?
(A) बहुत दिनों पर दिखना (B) नहीं आना
(C) गायब हो जाना (D) परेशान होना

5. 'अंधे की लकड़ी' मुहावरे का अर्थ क्या है ?
(A) एकमात्र सहारा (B) कमजोर होना
(C) असहाय होना (D) लकड़ी के सहारे चलना

6. 'अधजल गगरी छलकत जाए' लोकोक्ति का अर्थ क्या होगा ?
(A) आवश्यकता से अधिक प्रदर्शन करना
(B) गगरी भरी होना (C) प्रदर्शन न करना
(D) गगरी खाली होना

7. 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' लोकोक्ति का अर्थ क्या है ?
(A) बहाना करना (B) नर्तकी
(C) बयानबाजी करना (D) नृत्य करना

8. 'तीन तेरह होना' मुहावरे का अर्थ क्या होगा ?
(A) तितर-बितर होना (B) संकट आ जाना
(C) परेशान होना (D) दस तीन तेरह

9. 'हीरा' शब्द कौन संज्ञा है ?
(A) द्रव्यवाचक (B) जातिवाचक (C) समूहवाचक (D) भाववाचक

10. 'बुढ़ापा' शब्द कौन संज्ञा है ?
(A) भाववाचक (B) व्यक्तिवाचक (C) जातिवाचक (D) द्रव्यवाचक

11. 'काशी' शब्द कौन संज्ञा है ?
(A) जातिवाचक (B) भाववाचक (C) द्रव्यवाचक (D) व्यक्तिवाचक

12. 'सभा' शब्द कौन संज्ञा है ?
(A) जातिवाचक (B) व्यक्तिवाचक (C) समूहवाचक (D) द्रव्यवाचक

13. 'मनुष्य' शब्द कौन संज्ञा है ?
(A) व्यक्तिवाचक (B) समूहवाचक (C) जातिवाचक (D) भाववाचक

14. 'सजावट' शब्द कौन संज्ञा है ?
(A) भाववाचक (B) समूहवाचक (C) द्रव्यवाचक (D) जातिवाचक

15. 'शब्द' का पर्यायवाची क्या होगा ?
(A) निनाद (B) नाद
(C) ध्वनि (D) इनमें से सभी

16. 'गंगा' शब्द का पर्यायवाची क्या होगा ?
(A) मंदाकिनी (B) महाकाय (C) अनंत (D) सागर

17. 'सुन्दर' का पर्यायवाची क्या होगा ?
(A) ललित (B) तरु (C) कुरूप (D) कुन्दन

18. 'राजा' शब्द का पर्यायवाची क्या होगा ?
(A) नृप (B) भूप
(C) नृपति (D) उपर्युक्त सभी

19. 'पय' शब्द का पर्यायवाची क्या होगा ?
(A) पानी (B) दूध (C) तालाब (D) जल

20. 'सूर्य' शब्द का पर्यायवाची क्या होगा ?
(A) प्रकाश (B) किरण (C) भास्कर (D) अनल

21. 'संवत' शब्द का संधि-विच्छेद क्या होगा ?
(A) सं + वत (B) सम् + वत (C) स् + मवत (D) सन् +वत

22. 'सदाचार' शब्द का संधि-विच्छेद क्या होगा ?
(A) सद् + आचार (B) सदा + चार
(C) सत् + आचार (D) सदा + आचार

23. 'नायक' शब्द का संधि-विच्छेद क्या होगा ?
(A) नै + अक (B) ने + अक (C) निः + अक (D) ना + यक

24. 'उद्गम' शब्द का संधि-विच्छेद क्या होगा ?
(A) उत् + आगम (B) उत् + गम
(C) उत + आगम् (D) उद् + गम

25. 'परीक्षा' शब्द का संधि-विच्छेद क्या है ?
(A) परि + इक्षा (B) परी + ईक्षा (C) परी + इक्छा (D) परि + ईक्षा

26. 'हताहत' शब्द का संधि-विच्छेद क्या है ?
(A) हता + हत (B) हत + आहत (C) हत + हत (D) हताह + त

27. 'सभा' शब्द क्या है ?
(A) पुंल्लिंग (B) स्त्रीलिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

28. 'आत्मा' शब्द क्या है ?
(A) स्त्रीलिंग (B) उभयलिंग
(C) पुल्लिंग (D) इनमें से कोई नहीं

29. 'जौ' शब्द क्या है ?
(A) पुल्लिंग (B) स्त्रीलिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

30. 'आयु' शब्द क्या है ?
(A) पुल्लिंग (B) स्त्रीलिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

31. 'परीक्षा' शब्द क्या है ?
(A) पुल्लिंग (B) स्त्रीलिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

32. 'महिमा' शब्द क्या है ?
(A) पुल्लिंग (B) स्त्रीलिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

33. 'उपवन' शब्द में उपसर्ग क्या है ?
(A) उप (B) ऊप (C) अप (D) उ

34. 'प्रतिनिधि' शब्द में उपसर्ग क्या है ?
(A) प्रति (B) प्रत (C) धि (D) प्रतिनी

35. 'सुकर्म' शब्द में उपसर्ग क्या है ?
(A) सू (B) सु (C) सुक (D) सुकर

36. 'आनंदित' शब्द में प्रत्यय क्या है ?
(A) दित (B) इत (C) दित् (D) इत्

37. 'टिकाऊ' शब्द में प्रत्यय क्या है ?
(A) अऊ (B) आऊ (C) ऊ (D) उ

38. 'पढ़ाई' शब्द में प्रत्यय क्या है ?
(A) आई (B) ढ़ाई (C) ढ़ाइ (D) अई

39. 'आकाश' शब्द का विलोम क्या होगा ?
(A) गगन (B) नक्षत्र (C) अंबर (D) पाताल

40. 'पुरस्कार' शब्द का विलोम क्या होगा ?
(A) दण्ड (B) सम्मान (C) पारिश्रमिक (D) अपमान

41. 'कृपा' शब्द का विलोम क्या होगा ?
(A) करुणा (B) दया (C) आशीर्वाद (D) कोप

42. 'अर्वाचीन' शब्द का विलोम क्या होगा ?
(A) प्राचीन (B) आधुनिक (C) नवीन (D) अधुनातन

43. 'कृतज्ञ' शब्द का विलोम क्या होगा ?
(A) कृतार्थ (B) निन्दक (C) कृतघ्न (D) प्रत्युपकार

44. 'स्थावर' शब्द का विलोम क्या होगा ?
(A) देर तक (B) जंगम (C) स्थायी (D) टिकाऊ

45. 'धनहीन' शब्द कौन समास है ?
(A) कर्मधारय (B) तत्पुरुष (C) द्वन्द्व (D) बहुव्रीहि

46. 'त्रिदेव' शब्द कौन समास है ?
(A) तत्पुरुष (B) द्विगु (C) कर्मधारय (D) द्वन्द्व

47. 'भाई-बहन' शब्द कौन समास है ?
(A) कर्मधारय (B) द्वन्द्व (C) बहुव्रीहि (D) तत्पुरुष

48. 'स्वर्ग प्राप्त' शब्द कौन समास है ?
(A) तत्पुरुष (B) द्वन्द्व (C) द्विगु (D) अव्ययीभाव

49. 'पिताम्बर' शब्द कौन समास है ?
(A) तत्पुरुष (B) बहुव्रीहि (C) द्वन्द्व (D) अव्ययीभाव

50. 'आजीवन' शब्द कौन समास है ?
(A) कर्मधारय (B) द्विगु (C) अव्ययीभाव (D) तत्पुरुष

51. 'अपमान' शब्द का विशेषण क्या होगा ?
(A) अपमानी (B) अपमानित (C) अपमानकारी (D) अपमानहीन

52. 'रोमांच' शब्द का विशेषण क्या होगा ?
(A) रोमांचित (B) रोमांचकारी (C) रोमांचशील (D) रोमांचणीय

53. 'भूगोल' शब्द का विशेषण क्या होगा ?
(A) भूगोलकारी (B) भौगोलिक (C) भूगोलवादी (D) भूगोलिक

54. 'शिव' शब्द का विशेषण क्या होगा ?
(A) शैव (B) शनु (C) शिवि (D) शिवानी

55. 'सप्ताह' शब्द का विशेषण क्या होगा ?
(A) सप्ताहांत (B) सप्तेह (C) साप्ताहिक (D) साप्ताहीक

56. 'संपादक' शब्द का विशेषण क्या होगा ?
(A) संपादकीय (B) संपादन (C) संपादकी (D) संपादकीन

57. 'सर्वनाम' के कितने भेद होते हैं ?
(A) तीन (B) पाँच (C) छः (D) आठ

58. 'वर्तमान काल' के कितने भेद होते हैं ?
(A) पाँच (B) आठ (C) तीन (D) दस

59. 'प' का उच्चारण-स्थान क्या है ?
(A) तालु (B) ओष्ठ (C) दंत (D) कंठ

60. 'ण' का उच्चारण-स्थान क्या है ?
(A) मूर्द्धा (B) तालू (C) कंठ (D) दंत

61. 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' कहाँ के लोगों में सर्वाधिक प्रचलित है ?
(A) भारत (B) यूरोप (C) अफ्रीका (D) कनाडा

62. 'गाँव का घर' शीर्षक कविता के कवि कौन हैं ?
(A) ज्ञानेन्द्रपति (B) रघुवीर सहाय
(C) अशोक वाजपेयी (D) जयशंकर प्रसाद

63. 'सौ अजान एक सुजान' शीर्षक उपन्यास के लेखक कौन हैं ?
(A) रघुवीर सहाय (B) मोहन राकेश
(C) बालकृष्ण भट्ट (D) जयप्रकाश नारायण

64. 'बोलने से मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है''—यह किसने कहा है ?
(A) बेन जॉनसन (B) मार्क जॉनसन (C) नील जॉनसन (D) लिन जॉनसन

65. 'बिशनी' कौन है ?
(A) मानक की बहन (B) मानक की भाभी
(C) मानक की चाची (D) मानक की माँ

66. 'लेखक' शब्द का स्त्रीलिंग रूप क्या है ?
(A) लेखनीय (B) लेखिका (C) रचयिता (D) लेखीका

67. 'अभिनेता' शब्द का स्त्रीलिंग रूप क्या है ?
(A) नायिका (B) अभिनेत्री (C) सहनायिका (D) अभिनेताइन

68. 'पृथ्वी को धारण करने वाला' के लिए एक शब्द क्या है ?
(A) आकाशपिण्ड (B) भूकम्प (C) पार्थिक (D) महीधर

69. 'मृग जैसे नेत्रों वाली' के लिए एक शब्द क्या है ?
(A) मृगनयन (B) मृगनयनी (C) नयनाभिराम (D) कमलनयन

70. 'अज्ञेय' का पूरा नाम क्या है ?
(A) सच्चिदानंद हीरानंद (B) सच्चिदानंद हीरानंद वातास्यान
(C) सच्चिदानंद हीरानंद वाताशयन
(D) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय

71. 'मुक्तिबोध' का पूरा नाम क्या है ?
(A) दयानन्द माधव (B) गजानन माधव 'मुक्तिबोध'
(C) गजानन्द माधव (D) देवानंद माधव

72. 'जिसका जन्म बाद में हुआ हो' वह क्या कहलाता है ?
(A) अग्रज (B) कनिष्ठ (C) अनुज (D) ज्येष्ठ

73. निम्न में शुद्ध शब्द कौन है ?
(A) प्रशन (B) स्वर्ग (C) पुसतक (D) अनधेरा

74. निम्न में शुद्ध शब्द कौन है ?
(A) बालमीकि (B) वाल्मीकी (C) वाल्मीकि (D) बाल्मीकी

75. 'जिससे किसी बात के न होने का बोध हो' उसे क्या कहते हैं ?
(A) निषेधवाचक (B) विधिवाचक (C) आज्ञावाचक (D) संदेहवाचक

76. निम्न में शुद्ध शब्द कौन है ?
(A) प्रधानाचार्य (B) प्रधानाचर्य (C) प्रधानचार्य (D) परधानाचार्य

77. निम्न में शुद्ध शब्द कौन है ?
(A) प्रियदरशी (B) प्रियदर्सी (C) प्रियंदर्शी (D) प्रियदर्शी

78. निम्न में शुद्ध शब्द कौन है ?
(A) विकल्प (B) विकलप (C) वीकल्प (D) बिकल्प

79. 'किसी काम में दखल देना' क्या कहलाता है ?
(A) हस्तक्षेप (B) कर्मशील (C) कर्महीन (D) दखलकार्य

80. 'जानने की इच्छा रखने वाला' क्या कहलाता है ?
(A) जिज्ञासा (B) जिज्ञासु (C) जिजीविषा (D) जानकार

81. 'वन में चरने वाला' क्या कहलाता है ?
(A) जीव (B) जानवर (C) वनचर (D) बनचर

82. 'गुण-दोष विवेचक' क्या कहलाता है ?
(A) विवेचक (B) आलोचक
(C) निन्दक (D) गुण-दोष रहित

83. 'अज्ञेय' का जन्म कब हुआ था ?
(A) 1911 ई॰ (B) 2011 ई॰ (C) 1811 ई॰ (D) 1850 ई॰

84. नामवर सिंह का जन्म कब हुआ था ?
(A) 1927 ई॰ (B) 1827 ई॰ (C) 1727 ई॰ (D) 1627 ई॰

85. निम्न में से 'प्रेम के पीर' के कवि कौन हैं ?
(A) तुलसीदास (B) सूरदास (C) जायसी (D) कबीरदास

86. निम्न में से कौन राष्ट्रकवि हैं ?
(A) नागार्जुन (B) विद्यापति (C) दिनकर (D) बिहारीलाल

87. आचार्य रामचंद्र शुक्ल की नजर में बालकृष्ण भट्ट क्या थे ?
(A) साहित्य के एडीसन (B) लोकनायक
(C) विश्वशिक्षक (D) भाषा के डिक्टेटर

88. निम्न में से 'लोक नायक' शब्द किनके लिए प्रयोग किया जाता है ?
(A) प्रेमचंद (B) जयप्रकाश नारायण
(C) नागार्जुन (D) फणीश्वरनाथ 'रेणु'

89. निम्न में से 'ब्रजराज कुँवर' कौन हैं ?
(A) राम (B) बलराम (C) कृष्ण (D) नन्द

90. 'सूरसागर' के रचनाकार कौन हैं ?
(A) तुलसीदास (B) सूरदास (C) कबीरदास (D) जायसी

91. 'कड़बक' में कौन बात पायी जाती है ?
(A) प्रेम की महिमा (B) ईश्वर की महिमा
(C) मानव की महिमा (D) दानव की महिमा

92. नामवर सिंह के गुरु कौन थे ?
(A) हजारी प्रसाद द्विवेदी (B) रामचन्द्र शुक्ल
(C) रामविलास शर्मा (D) महावीर प्रसाद द्विवेदी

93. 'कामायनी' के रचयिता कौन हैं ?
(A) जयशंकर प्रसाद (B) नागार्जुन
(C) निराला (D) महादेवी वर्मा

94. 'हँसते हुए मेरा अकेलापन' हिन्दी साहित्य की कौन विधा है ?
(A) डायरी (B) यात्रा-वृतान्त (C) आत्मकथा (D) शब्द-चित्र

95. निम्न में से गद्य कविता कौन है ?
(A) अधिनायक (B) हार-जीत
(C) गाँव का घर (D) प्यारे नन्हें बेटे को

96. 'भूषण' किस रस के महान कवि हैं ?
(A) श्रृंगार रस (B) हास्य रस (C) वीर रस (D) वीभत्स रस

97. 'ओ सदानीरा' निबंध किस नदी को आधार बनाकर लिखा गया है ?
(A) गंगा नदी (B) यमुना नदी (C) कोसी नदी (D) गंडक नदी

98. 'जायसी' किस काल-खंड के कवि हैं ?
(A) आदिकाल (B) भक्तिकाल
(C) रीतिकाल (D) आधुनिक काल

99. संत तुलसीदास कैसे कवि हैं ?
(A) समन्वयवादी (B) रहस्यवादी (C) पृथक्तावादी (D) छायावादी

100. किस कहानी का शीर्षक 'गैंग्रीन' था ?
(A) उसने कहा था (B) रोज
(C) रस्सी का टुकड़ा (D) तिरिछ

खण्ड–ब (विषयनिष्ठ प्रश्न)

1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिये : 1 × 8 = 8
(i) हमारे प्रिय लेखक : प्रेमचंद
(ii) हमारे पावन पर्व
(iii) प्राकृतिक आपदा
(iv) नारी सशक्तिकरण
(v) आरक्षण नीति
(vi) आतंकवाद

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या करें : 2 × 4 = 8
(i) "वसुन्धरा भोगी मानव और धर्मांध मानव एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।"
(ii) "पुरुष जब नारी के गुण लेता है तब वह देवता बन जाता है, किंतु नारी जब नर के गुण सीखती है तब वह राक्षसी हो जाती है।"
(iii) "चाँद जइस जग विधि औतारा
दीन्ह कलंक कीन्ह उजिआरा।"
(iv) "तड़प रहे हैं विकल प्राण ये
मुझको पल भर शांति नहीं है
वह खोया धन पा न सकूँगी
इसमें कुछ भी भ्रांति नहीं है।"

3. अपने प्रधानाचार्य के पास एक आवेदन-पत्र लिखें जिसमें आर्थिक सहायता के लिए अनुरोध हो। 1 × 5 = 5

अथवा

बिजली की कमी दूर करने हेतु राज्य के बिजली मंत्री को एक पत्र लिखें।

4. निम्नांकित प्रश्नों में से किन्हीं पाँच के उत्तर दें : 5 × 2 = 10
(i) उत्सव कौन और क्यों मना रहा है ?
(ii) भगत सिंह कौन थे ?
(iii) जिसे भी पुरुष अपना कार्य क्षेत्र मानता है, वह नारी का भी कार्यक्षेत्र है, कैसे ?
(iv) लेखक के अनुसार सुरक्षा कहाँ है ? वह डायरी को किस रूप में देखना चाहता है ?
(v) सड़कों को क्यों सींचा जा रहा है ?
(vi) तुलसीदास रचित प्रथम पद (कबहुँक अंब) का भावार्थ लिखिए।
(vii) कवि ने अपनी एक आँख की तुलना दर्पण से क्यों की है ?
(viii) 'जय-जय कराना' का क्या अर्थ है ?
(ix) कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान का कवि परिचय दें।
(x) 'धाँगड़' शब्द का क्या अर्थ है ?

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन का उत्तर दें : 3 × 5 = 15
(i) 'रोज' शीर्षक कहानी का सारांश लिखिए।
(ii) 'अर्धनारीश्वर' शीर्षक पाठ में रवींद्रनाथ, प्रसाद और प्रेमचंद के चिंतन से दिनकर क्यों असंतुष्ट हैं ?
(iii) सूरदास रचित पठित पद के आधार पर सूर के वात्सल्य वर्णन की विशेषताएँ लिखिए।
(iv) 'हँसते हुए मेरा अकेलापन' शीर्षक पाठ का सारांश लिखिए।
(v) 'गाँव का घर' शीर्षक कविता का भावार्थ लिखें।
(vi) 'पेशगी' शीर्षक कहानी में कारमेन की भूमिका को संक्षेप में लिखिए।

6. **निम्नलिखित अवतरणों में से किसी एक का संक्षेपण कीजिए :** **1 × 4 = 4**

(i) प्रत्येक मनुष्य के जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। यदि तुम्हारा कोई उद्देश्य नहीं है तो तुम सफल न होगे। क्या करोगे इसको तुम्हें जानना आवश्यक है। उद्देश्यहीन मनुष्य बिना पतवार की नाव की तरह है। विभिन्न मनुष्यों के विभिन्न उद्देश्य होते हैं। बहुत लोग धन कमाना चाहते हैं। कुछ लोग आनन्द उठाना चाहते हैं। कुछ लोग विद्या के लिए परेशान हैं। तुम्हारा उद्देश्य देश की सेवा करना होना चाहिए। तुम्हारा देश विकासशील है।

(ii) ईश्वर उनकी सहायता करते हैं, जो स्वयं अपनी सहायता करते हैं। मनुष्य के अंदर स्वयं सहायता करने का जो उत्साह होता है, वही उसकी सफलता का आधार होता है। जब यह उत्साह बहुत से लोगों में पाया जाता है, तब यह राष्ट्रीय प्रगति एवं राष्ट्रीय दृढ़ता का आधार बन जाता है। इसके साथ-साथ आत्म-सम्मान की भावना जो मनुष्य की श्रेष्ठ क्षमताओं में से एक है। इसके कारण मनुष्य के चरित्र की वास्तविक उन्नति होती है और यश की प्राप्ति होती है।

उत्तर

खण्ड–अ (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

1. (D)	2. (C)	3. (A)	4. (A)	5. (A)	6. (A)
7. (A)	8. (A)	9. (A)	10. (A)	11. (D)	12. (C)
13. (C)	14. (A)	15. (B)	16. (A)	17. (A)	18. (D)
19. (B)	20. (C)	21. (B)	22. (C)	23. (A)	24. (B)
25. (D)	26. (B)	27. (B)	28. (A)	29. (B)	30. (B)
31. (B)	32. (B)	33. (A)	34. (A)	35. (B)	36. (B)
37. (B)	38. (A)	39. (D)	40. (A)	41. (D)	42. (A)
43. (C)	44. (B)	45. (B)	46. (B)	47. (B)	48. (A)
49. (B)	50. (C)	51. (B)	52. (A)	53. (B)	54. (A)
55. (C)	56. (A)	57. (C)	58. (C)	59. (B)	60. (B)
61. (B)	62. (A)	63. (C)	64. (A)	65. (D)	66. (B)
67. (B)	68. (A)	69. (B)	70. (D)	71. (B)	72. (C)
73. (B)	74. (C)	75. (A)	76. (A)	77. (D)	78. (A)
79. (A)	80. (B)	81. (C)	82. (B)	83. (A)	84. (A)
85. (C)	86. (C)	87. (A)	88. (B)	89. (C)	90. (B)
91. (A)	92. (A)	93. (A)	94. (A)	95. (B)	96. (C)
97. (D)	98. (B)	99. (D)	100. (B)		

खण्ड–ब (विषयनिष्ठ प्रश्न)

1. **(i) हमारे प्रिय लेखक : प्रेमचंद**

प्रेमचंद का जन्म बनारस में 1880 ई॰ में हुआ था। उन्होंने गरीबी को अत्यंत समीप से देखा था। इसलिए उनकी रचना में यथार्थवाद का मूलाधार है। इनका पूर्वनाम धनपत राय था। घर के बुजुर्ग प्यार से नवाब राय भी कहते थे। 1907 ई॰ में इनकी कहानी का एक संग्रह 'सोजेवतन' प्रकाशित हुआ। जिसे तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने जब्त कर लिया। फिर 'प्रेमचंद' छद्मनाम से लिखने लगे। 1920 ई॰ में महात्मा गाँधी के आह्वान पर प्रेमचंद ने अध्यापक की नौकरी छोड़ दी और वे साहित्य-सेवा में लग गए।

प्रेमचंद अपनी रचनाएँ पहले उर्दू में करते और फिर स्वयं ही हिन्दी में अनूदित करते। इसलिए प्रेमचंद को उर्दू और हिन्दी दोनों साहित्य के इतिहास में महान कथाकार के रूप में मूल्यांकित किया गया है। प्रेमचंद ने तीन सौ कहानियाँ लिखी हैं, जो मानसरोवर (आठ भाग), गुप्त धन (दो भाग) तथा कफन में संकलित हैं। सेवासदन, रूठी रानी, कृष्ण, वरदान, प्रेमाश्रम, निर्मला, रंगभूमि, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, मंगलसूत्र, गोदान आदि उपन्यास प्रेमचंद ने 1900 ई॰ से 1936 ई॰ के बीच लिखे। संग्राम, कर्बला और प्रेम की वेदी प्रेमचंद के तीन नाटक हैं। उन्होंने दो दर्जन से अधिक बाल पुस्तकों की रचना की है।

प्रेमचंद मुख्यतः कहानीकार तथा उपन्यासकार के रूप से प्रतिष्ठित हैं। इन्हें कथा सम्राट कहा जाता है। प्रेमचंद महाजनी सभ्यता के खिलाफ आवाज उठाते रहे। उन्होंने जमींदारी तथा धार्मिक पाखंडवाद का भी विरोध किया। ये जीवन के यथार्थवाद के प्रबल समर्थक थे। प्रेमचंद कृषि संस्कृति के समुद्धारक थे। उन्होंने नारी-जागरण और धार्मिक सहिष्णुता को भी अपनी कथाओं को बिन्दु बनाया है। 1936 ई॰ में छप्पन वर्ष की अवस्था में प्रेमचंद का निधन हो गया। उन्होंने हिन्दी कथा साहित्य को जासूसी-तिलस्मी अंधकार से निकालकर 'गोदान' की ऊँचाई दी थी।

(ii) हमारे पावन पर्व

भारत को त्योहारों का देश कहा जाता है। भारतीय त्योहार मुख्य रूप से फसलों के त्योहार हैं। इसका कारण है, भारत का कृषि-प्रधान देश होना। लगभग सभी त्योहार धर्मों से संबंधित हैं। भारत अनेक धर्मों का देश है। यहाँ हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिख, पारसी, ईसाई और इस्लाम धर्म को मानने वाले लोग रहते हैं। सभी धर्मों को मानने वालों को अपने-अपने धर्म पालन और त्योहार मनाने की स्वतंत्रता है। इसलिए धार्मिक त्योहार भी विविधता लिए हुए हैं। इनसे एक-दूसरे के धर्मों को जानकर अच्छे मनुष्य बनने का भाव जागृत होता है। दशहरा, दीपावली, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, रामनवमी, ईद, मुहर्रम, गुरु पर्व, क्रिसमस, महावीर जयंती आदि धार्मिक त्योहार हैं।

होली भारतवासियों का एक सांस्कृतिक त्योहार है। ऋतुराज वसंत के आगमन की तिथि फाल्गुनी पूर्णिमा पर नयी भावनाओं एवं नयी उमंगों को लानेवाला होली का त्योहार है। वसंतोत्सव का यह पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। यह पर्व एक साथ ही मौज-मस्ती, रवानी-जवानी, रंगीली-अलमस्ती की याद दिलाता है। यह पर्व भारतीय संस्कृति की एक पौराणिक कथा से जुड़ा हुआ है। हिरण्यकशिपु नामक एक महाबली दानवराज था, जो अपने को सृष्टिकर्ता ईश्वर से भी श्रेष्ठ मानता था। उसका पुत्र प्रह्लाद ईश्वर-भक्त था। उसकी बहन होलिका को अग्निदेव नहीं जला सकते थे, ऐसा उसको वरदान था। हिरण्यकशिपु ने होलिका की गोद में प्रह्लाद को बैठाकर जिंदा जलाने का प्रयास किया। ईश्वर की महिमा अपरम्पार है। होलिका वरदान रहते हुए भी जल गई, परंतु ईश्वर-भक्त प्रह्लाद का बाल-बाँका नहीं हो सका।

इस प्रकार, नास्तिकता पर आस्तिकता की, बुराई पर अच्छाई की, पाश्विकता पर देवत्व की विजय हुई। बाद में ईश्वर ने नृसिंहावतार धारण कर आततायी हिरण्यकशिपु का नाश किया। दूसरी कथा के अनुसार जब भगवान श्रीकृष्ण ने दुष्टों का दमन कर गोप बालाओं के साथ रासलीला रचाया, तब होली पर्व का प्रचलन हुआ। इस त्योहार के पीछे जो भी गाथा रही हो, इतना निश्चित है कि हर्षोल्लास का यह पर्व दुराग्रह पर सत्याग्रह की विजय का प्रतीक है। यह आनंद एवं उत्साह का महोत्सव है।

भारत में शक्ति और ऐश्वर्य की पूजा अति प्राचीनकाल से चली आ रही है। शास्त्रबल के साथ ही भारतवासियों ने शस्त्रबल को भी अधिक महत्त्व दिया है। यही कारण है कि देवी दुर्गा की आराधना भारतवासी प्राचीनकाल से ही करते चले आ रहे हैं।

दुर्गापूजा को विजयादशमी के नाम से भी पुकारा जाता है। इसके भी कई कारण हैं। इस दशमी की तिथि को विजया अर्थात् महाशक्ति की विधिपूर्वक आराधना एवं अनुष्ठान किया जाता है, इस कारण इसे विजयादशमी कहा जाता है। यह भी कहा जाता है कि इस तिथि को भगवान श्रीराम ने देवी दुर्गा की आराधना करके आततायी रावण पर विजय प्राप्त की थी और इसी कारण यह तिथि विजयादशमी के नाम से विख्यात हुई। एक अन्य मान्यता के अनुसार, यदि दशमी को श्रद्धापूर्वक देवी की आराधना की जाये तो जीवन में जय अवश्यंभावी होती है। यह भी मान्यता है कि महाविद्याओं एवं इन्द्रियों की संख्या 10 है। माता की आराधना इन दसों महाविधाओं एवं इन्द्रियों पर अधिकार करने के लिए की जाती है। दुर्गापुजा को 'दशहरा' के नाम से भी पुकारा जाता है, क्योंकि इसी दिन दसमुख (रावण) का संहार किया गया था और उसके द्वारा उत्पन्न किये गये कष्टों का हरण किया गया था।

दुर्गापूजा महोत्सव भारत में अत्यंत धूमधाम से मनाया जाता है। औपचारिक रूप से यह उत्सव आश्विन मास की दूसरी प्रतिपदा से दशमी तक मनाया जाता है। भारत के विभिन्न भागों में दुर्गापूजा का आयोजन विभिन्न ढंग से होता है। न केवल भारत अपितु विदेशों में भी जहाँ भारतीय मूल के निवासी हैं, वहाँ दुर्गापूजा का आयोजन हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

भारत में दीपावली को एक महान राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक पर्व माना जाता है। दीपावली के आरम्भ की अनेक पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं। सर्वाधिक प्रचलित कथा के अनुसार श्री रामचन्द्र जब चौदह वर्षों के वनवास के बाद रावण को मारकर सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटे तब सभी जगह खुशी से दीप जलाये गये थे। उसी विजय की स्मृति में यह दीपावली हर वर्ष मनाई जाने लगी। कथा चाहे जो भी हो, एक बात बिल्कुल साफ है कि दीवाली हर वर्ष भारतवासियों को जीवन का नया संदेश देने आती है कि सत्य की जीत और असत्य की हार एक-न-एक दिन अवश्य होती है। यह हमारे जीवन का अन्धकार दूर कर फुलझड़ियों की तरह नया प्रकाश बिखेरती है। हम अपने अन्दर नवीनता का अनुभव करते हैं।

'ईद' मुसलमानों के लिए सबसे बड़ा आनंद-पर्व है। जिस प्रकार होली हिंदुओं का मौज-मस्ती का त्योहार है, उसी प्रकार ईद मुसलमानों का पर्व है। 'ईद' शब्द का अर्थ होता है—खुशी।

ईद के दिन लोग सबेरे ईदगाहों में जाते हैं और चार सिजदों में नमाज अदा करते हैं। नमाज के बाद इमाम खुतबा पढ़ते हैं तथा 'फित्रा' का महत्त्व बताते हैं। खुतबा के बाद ईदगाह में एकत्रित लोग आपस में गले मिलते हैं और आंतरिक प्रेम की वर्षा करते हैं। इस दृश्य से ऐसा प्रतीत होता है कि मनुष्य-मनुष्य के बीच वैमनस्य की कोई दीवार न हो। सारी दुश्मनी ईद की घड़ी में खत्म हो जाती है। लोगों के बीच एक नया रिश्ता या प्रेम-संबंध आरंभ हो जाता है।

(iii) प्राकृतिक आपदा

प्राकृतिक आपदा प्रकृति प्रदत्त विपत्ति है। पहले अतिवृष्टि और अनावृष्टि ही प्राकृतिक आपदा थी। अब समुद्र में उठने वाली लहरों-भवरों के कारण बड़ा-बड़ा तूफान आ जाती है। इसके कारण अनंत वर्षा होने लगती है। बादल फट पड़ते हैं। बर्फ की फूलझरी छूटने लगती है। समुद्र का पानी धरती पर कई-कई बाँस ऊपर चढ़ आता है। झोपड़ियाँ एवं छोटे मकान बहने लगते हैं। बड़े-बड़े मकान गिरने लगते हैं। मनुष्य एवं जीवजंतु पानी में बहने लगते हैं। उखड़े मकानों के अंदर दबने लगते हैं। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच जाती है। कौन कहाँ कैसे प्रकृति के आक्रोश की चपेट में आ जाएगा कहना मुश्किल है।

प्राकृतिक आपदाओं से लाभ कम और हानि अधिक होती है। मनुष्य को उनसे बचने का उपाय ढूँढ़ना होगा। सरकारों को भी आपदा से निपटने के लिए आगे आना होगा। मनुष्यों को भी संगठन बनाकर विपत्तिग्रस्त लोगों की रक्षा में आगे आना होगा।

सूखा से बचने के लिए, अनावृष्टि से बचने के लिए उपाय करने होंगे। सिंचाई की सुविधा का विस्तार करना होगा। अनाज की सुरक्षित भंडारण करना होगा। नदियों को दूसरी नदियों से जोड़ना होगा। जल भंडारण के लिए उपाय करने होंगे।

बाढ़ आने पर भी बड़ी विपत्ति आ जाती है। धरती के बड़े भू-भाग पर जल ही जल दिखाई पड़ने लगता है। लोग एवं जीव-जंतु डूबने-उतराने लगते हैं। फसल बह जाती है। भंडारित अनाज डूब जाते हैं। खाने-पीने को कुछ नहीं बचता है। बीमारी फैलने लगती है। दवा-दारु की कमी हो जाती है।

सूनामी दक्षिण भारत में आई थी। अनन्त पानी तूफान के साथ समुद्री किनारों पर चढ़ आया। हजारों लोगों की मौत हो गयी। लाखों मकान ढह गए। मछुआरे पानी की चपेट में आकर बह गए। भयंकर तूफान और वर्षा का सामना दक्षिण भारतीय लोगों ने किया।

पिछले वर्ष उत्तराखण्ड में बादल फट पड़े। तूफानी वर्षा हुई। उत्तराखण्ड के मंदिर बद्रीनाथ, केदारनाथ पानी की चपेट में आ गए। तीर्थयात्री काल के गाल में चले गए। महीनों लोग पहाड़ों पर घिरे रहे। वर्षा में भींगते रहे। कुछ तो पानी में बह गए। कुछ को हेलीकॉप्टर से सेना ने बचाया। एक बड़ा पुनर्निर्माण का काम इस क्षेत्र में करना होगा।

उड़ीसा में घिनाले का तूफान आया। अनंत वर्षा आयी। गरीबी और भूखमरी से पहले से ग्रस्त जनता तबाह हो गयी। पूरे भारतवर्ष पर इस तूफानी वर्षा का असर हुआ। भँवर कमजोर पड़ने पर राहत मिली।

भूकंप भी प्राकृतिक विपदा है। उत्तराखण्ड में यह अक्सर आया करता है। पूरे भारत की धरती कब, कहाँ, कैसे डोल जाएगी—इसका ठिकाना नहीं है। भूकंपरोधी मकान भी नहीं बने हैं। खतरा बड़े पैमाने पर भी हो सकता है।

ज़ाड़ा भी इस वर्ष ज्यादा अवधि तक पड़ा। कश्मीर, गुलमर्ग, शिमला में बर्फ के फुहारे तीन माह तक पड़ते रहे। लोग ठंढक से तबाह हुए। मौसम अब अपना चरित्र बदल रहा है। गर्मी ज्यादा तो ठंढक भी ज्यादा पड़ने लगी है। अमेरिका, चीन, जापान में भी बर्फवारी खूब हुई।

लू भी प्राकृतिक विपत्ति ही है। भारत में गर्मी अधिक पड़ती हैं। एक-एक दिन में वाराणसी में तीन-तीन सौ लाशे लू की चपेट में गयीं। लोग मरने लगे। पीने का पानी ठीक से नहीं मिला। गरीबी के कारण खाना पूरी नहीं मिला। लू लपेट ले गयी।

पहले प्राकृतिक विपत्ति के रूप में प्लेग, हैजा एवं पोलियो जैसी बीमारियाँ लोगों को लपेट ले जाती थी। मलेरिया, कालाजार, हृदयरोग, डायबीटीज इत्यादि बीमारियाँ जान लेती रही है। सर्पदंश एवं अन्य प्राकृतिक विपत्तियाँ मनुष्य का जीना मुहाल कर देती हैं।

प्राकृतिक विपदाओं से बचने के लिए सरकारों को उपाय करने होंगे। लोगों को ट्रेनिंग देनी होगी। सामाजिक स्तर भी लोगों को जाग्रत करना होगा। शिक्षा के प्रसार से रक्षा के उपाय निकालने होंगे। व्यक्तिगत स्तर पर भी सचेत होना होगा। संकट आने की पूर्व सूचना उपग्रहों के मार्फत् लोगों को देनी होगी। तभी आधी जानें बचायी जा सकती है। आधी जानें घटनोत्तर सेवा कार्य से बचायी जा सकती है।

समासतः प्राकृतिक विपदा से बचने के लिए सरकार एवं जनता दोनों को सचेत रहना होगा।

(iv) नारी सशक्तिकरण

प्रस्तावना—इस सृष्टि के दोनों रूपों को निरंतर चलते रहने हेतु सृष्टी ने सभी जीवधारियों में नर और मादा बनाए और तदनुरूप शरीर गठन किया। दोनों के परस्पर सहयोग से ही जीवन की गाड़ी सरलता और सुगमता से चलती रहती है। दोनों ही गाड़ी के दो समान ऊँचाई के पहिए हैं। कोई कम ज्यादा नहीं। दोनों के ही कर्तव्य, अधिकार, कार्यक्षेत्र सुनिश्चित है और वैसे ही स्वभाव प्रदान किए हैं, सृष्टी ने नारी कोमल, दयालु, संकोची, सेवाभावी है तो पुरुष कठोर एवं अधिक परिश्रमी है।

समाज में नारी का स्थान—भारतीय दर्शन, संस्कृति, परम्पराओं में नारी को पुरुषों से भी ऊंचा स्थान दिया गया है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।' नारी देवी है, वह माँ भी है, बहन भी है और पुत्री भी। पर स्त्री को माता कहा गया है 'मातृवत् परदारेषु'। इतने उच्च स्थान पर भारतीय वाङ्मय में नारी का बखान किया गया है जबकि पाश्चात्य देशों में मात्र उसे उपभोग की वस्तु अथवा सुविधा की साझीदार माना गया है।

प्राचीन काल में नारी शिक्षित विदुषी, कर्तव्यपरायण होती थी। ज्ञान विज्ञान, अध्यात्म, लोकाचार किसी भी क्षेत्र में पुरुष से कम नहीं थी। मार्गी, अपाला, अरुन्धती आदि तो प्रवीण थी ही सावित्री जैसी भी थीं जो साक्षात यमराज से अपने पति सत्यवान के प्राण वापस लाई थी। ऋषि आलय हो या राजमहल, कंगाल हो या धनवान, नारी सर्वत्र ही पूज्य थी।

नारी का महत्व—मध्य काल आते-आते नारी का स्थान पुरुषों की स्वार्थपरता काम-लोलुपता आदि के कारण न केवल गिर गया बल्कि उसके अधिकारों पर कुठाराघात होने लगा। कार्यक्षेत्र सीमित हो गया, नारी को गंदे कपड़े की तरह बदला जाने लगा। साहित्यकार भी नारी को दोषों की खान के रूप में देखने लगे। एक अंग्रेजी नाटककार ने तो यहाँ तक कहा कि 'Frailty Thy name is woman.' (व्यभिचार, दुर्बलता। तेरा नाम ही औरत है) विदेशियों की काम-लोलुप निगाहों से बचने के लिए पर्दा प्रथा प्रारंभ हुयी। नारी घर की चारदीवारी में कैद हो गयी तथा शिक्षा के प्रति भी नारी को निरूत्साहित किया गया।

नारी जागरण व नारी शिक्षा हेतु प्रयास—आधुनिक काल आते-आते जहाँ नारी को पैरों की जूती समझा जाता था अनेक अत्याचार उन पर होते थे, वहाँ अब नारी जागरण, नारी स्वतंत्रता का बिगुल बज उठा। स्वामी दयानंद के आर्य समाज ने नारी शिक्षा का मंत्र फूँका। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा रुकवाई। महात्मा गाँधी ने नारी उत्थान का नारा दिया। अनेक समाजसेवी व्यक्तियों ने पतित अबलाओं, अपहृताओं और वेश्याओं का उद्धार किया। सरकार ने भी संविधान द्वारा नारी को शिक्षा प्राप्त करने, नौकरी करने आदि के समान अधिकार और अवसर प्रदान किए हैं। महिला सुधार हेतु नारी निकेतन खोल दिए गए हैं। आज की नारी डॉक्टरी, इंजीनियरिंग, अध्यायान लिपिकीय कार्य आदि क्षेत्रों में तो काम कर ही रही है, पुलिस रक्षा के क्षेत्र में भी उच्च पदस्थ हैं। पूर्व में प्रतिभा देवी सिंह पाटिल (राष्ट्रपति), किरण बेदी, बछेंद्रीपाल (पर्वतारोहण में) अपना उच्च स्थान प्राप्त कर चुकी हैं। दहेज प्रथा को भी समाप्त करने के लिए कानून पारित किया जा चुका है। किंतु समाज ने उसे अभी पूर्णरूपेण नहीं अपनाया है। अत: आए दिन

बहुओं को जलाने, घर से बाहर करने की घटनाएँ देखने-सुनने को मिलती रहती है।

उपसंहार–यद्यपि सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं एवं समाजसेवी व्यक्तियों द्वारा महिला उत्थान के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे हैं और किए जाते रहेंगे तथापि जब तक समाज जागरूक नहीं होगा और नारियों के प्रति असहिष्णुता का दृष्टिकोण नहीं त्यागा जाएगा तबतक पर्याप्त सफलता नहीं मिलेगी। आज आवश्यकता है कि पुरुष समाज अपने दृष्टिकोण को बदले, नारी को सच्चे हृदय से ऊपर उठाकर समकक्ष लाने का प्रयास करे और उसकी प्रगति में अड़ंगे डालने से बाज आए। साथ ही नारियों का भी दायित्व है कि वे अपने दायित्व और पारिवारिक जीवन को स्वच्छ और सफल बनाते हुए अपने त्याग सहिष्णुता लज्जा आदि दैवीय गुणों को न त्यागे। वरन् सेवाव्रती कर्तव्यपरायण बनी रहे। बरसाती नदी जो अपने कूलों को तोड़ती-फोड़ती ऊछंखल गति से बहती है उसकी भाँति अमर्यादित न हो जाएँ। तभी वह अपने उच्च महत्वपूर्ण स्थान को पुनः प्राप्त कर सकेंगी।

(v) आरक्षण नीति

सामान्यतः सामाजिक न्याय का अर्थ सभी को समान सुविधा, समान शिक्षा तथा क्षमताओं के विकास और सत्ता में भागीदारी के लिए समान अवसर उपलब्ध कराना है। कहने का तात्पर्य है कि सभी लोगों को भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा तथा विकास का समान अवसर उपलब्ध कराना ही सामाजिक न्याय का लक्ष्य है। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति को आर्थिक अवसर तथा राजनीतिक अधिकारों की समानता, प्रत्येक को अपनी क्षमताओं के विकास के लिए सक्षम बनाना ही सामाजिक न्याय का मुख्य अभिप्राय है। भारत का संविधान अपने लक्ष्यों में इस विचार को समाहित किये हुए है, परन्तु भारतीय सन्दर्भ में सामाजिक न्याय का अर्थ यहीं तक सीमित नहीं है। इसका लक्ष्य आर्थिक तथा राजनीतिक समानता के साथ सदियों से चली आ रही अन्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था को ध्वस्त कर एक नये सत्तापूर्ण समाज की रचना करना है। **महात्मा फूले** के शब्दों में, सामाजिक न्याय, सामाजिक औचित्य को कहते हैं। समाज में औचित्य तभी संभव है जब अवसर की समानता हो तथा जाति-आधारित समाज-व्यवस्था को समाप्त करना और पूर्व की सामाजिक व्यवस्था समाप्त करके एक नये समतापूर्ण समाज की रचना की जाए।

आधुनिक काल में न्यायपूर्ण सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन के निर्माण के लिए विकासतंत्र में प्रतियोगिता के दौर से विरत पिछड़ों को अवसर उपलब्ध कराने की व्यवस्था को आरक्षण कहा जाता है। इसका उद्देश्य अन्यायपूर्ण, जाति-आधारित समाज-व्यवस्था को समाप्त करना और पूर्व की सामाजिक व्यवस्था की बदौलत विकास के दौर में पिछड़ गये तथा दलित समूह को विकास का अवसर उपलब्ध कराना है। इस प्रकार, आरक्षण वर्ण, लिंग तथा जातीय उत्पीड़न के खिलाफ एक सशक्त राजकीय व्यवस्था बन कर सामने आयेगा। सामान्यतः आरक्षण की अवधारणा सामान्य सामाजिक न्याय से अलग किसी विशेष वर्ग, जाति, समाज या क्षेत्र के विकास तथा सुरक्षा के विशेष उपबंध से जुड़ी है। भारत में आरक्षण के अन्तर्गत पिछड़ी तथा दलित जातियों के विकास के लिए राजकीय व्यवस्था द्वारा नौकरी, शिक्षा तथा वित्तीय व्यवस्था में विशेष अवसर उपलब्ध कराया जाता है। इस उपबंध को सामाजिक न्याय स्थापित करने तथा समतामूलक समाज का निर्माण करने के रास्ते में एक कारगर उपाय माना गया है। इस प्रकार, आरक्षण सामाजिक न्याय का पूरक बनकर सामने आया है।

1990 में **वी॰ पी॰ सिंह** सरकार ने मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू किया। इसके द्वारा केन्द्रीय सरकार की नौकरियों में पिछड़े वर्ग के लिए आरक्षण देने का प्रावधान लागू हुआ। इस कदम की तीखी प्रतिक्रिया हुई और उत्तर भारत में आरक्षण विरोधी ज्वाला भड़क उठी। पिछड़ों को आरक्षण देने के प्रावधान को लेकर सर्वोच्च न्यायालय में मुकदमे दायर हुए। सर्वोच्च न्यायालय ने सरकारी अध्यादेश के कार्यान्वयन पर रोक लगा दी। बाद में मुख्य न्यायाधीश एम॰ एच॰ कानिया की अध्यक्षता में सर्वोच्च न्यायालय की नौ सदस्यीय खंडपीठ ने एक ऐतिहासिक निर्णय दिया। इसमें सामाजिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिए सरकारी नौकरियों में 27% आरक्षण देने की व्यवस्था को वैध करार दिया गया, लेकिन खंडपीठ ने आर्थिक आधार पर ऊँची जाति के कमजोर लोगों के लिए 10% अतिरिक्त आरक्षण देने के प्रावधान को असंवैधानिक करार दिया। सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्णय में माना कि पदोन्नति के मामले में आरक्षण का लाभ नहीं दिया जा सकता। साथ ही असाधारण परिस्थितियों को छोड़कर 50% से अधिक आरक्षण की व्यवस्था नहीं की जा सकती। खंडपीठ ने सामाजिक न्याय के दर्शन के औचित्य को मानते हुए यह भी निर्णय दिया कि पिछड़ी जातियों के सम्पन्न और दबंग लोगों के पुत्र-पुत्रियों को आरक्षण का लाभ देना उचित नहीं है। इसके लिए क्रीमीलेयर की पहचान कराने और उनको आरक्षण से वंचित करने का सुझाव दिया गया। यह निर्णय सामाजिक न्याय को विस्तार देने के मामले में एक ऐतिहासिक कदम सिद्ध हुआ, क्योंकि सीधे आरक्षण की व्यवस्था करने से पिछड़ी जातियों के मध्य नवब्राह्मणवाद का उदय होने तथा आरक्षण का लाभ मुट्ठीभर साधन-सम्पन्न लोगों द्वारा हड़प लिये जाने का खतरा उत्पन्न हो गया था।

22 फरवरी, 1993 को क्रीमीलेयर की पहचान के लिए पटना उच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्यायमूर्ति **रामानंद प्रसाद** की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया। प्रसाद आयोग ने पिछड़ी जातियों में अगड़ों की पहचान के लिए कुछ मानदंड निर्धारित किये हैं। उसके अनुसार, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, सर्वोच्च एवं उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, संघ एवं राज्य लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष तथा सदस्य, मुख्य चुनाव आयुक्त, महालेखाकार जैसे सांविधानिक पदों पर आसीन व्यक्तियों के परिवारों को आरक्षण की सुविधा प्राप्त नहीं होगी। राज्यपाल, मंत्री, सांसद एवं विधायकों के पद पर आसीन व्यक्तियों के लिए पद के मानदंड की बजाय आय एवं संपदा का मानदंड लागू होगा। सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से पिछड़ी जातियों से आय समूह 'ए' तथा अखिल भारतीय केन्द्रीय सेवाओं और राज्य सेवाओं में सीधे चयन से भर्ती हुए प्रथम श्रेणी के पदाधिकारियों के बच्चों को आरक्षण की सुविधा से वंचित कर दिया गया है। लेकिन ऐसी सेवाओं में कार्यरत पति-पत्नी दोनों के निधन होने की स्थिति में उनके बच्चों को आरक्षण देने की सिफारिश की गयी है। दूसरी तरफ, इस वर्ग के अधिकारियों से विवाह करनेवाली पिछड़ी जाति की महिलाओं को आरक्षण की सुविधा का पात्र माना गया है। साथ ही कुम्हार, धोबी, नाई जैसी पुश्तैनी पेशा में लगे लोगों को आय तथा संपत्ति की सीमा से अलग रखा गया है, यानी उन्हें आरक्षण का हकदार माना गया है। प्रसाद आयोग ने एक लाख रुपये वार्षिक आयवाले लोगों को पिछड़े वर्ग के अन्तर्गत आरक्षण प्राप्त करने का हकदार नहीं माना है।

इस प्रकार, प्रसाद आयोग ने पिछड़ी जातियों के अगड़ों को आरक्षण की सुविधा से वंचित कर सामाजिक न्याय को विस्तार देने का ऐतिहासिक कार्य किया है। फिर भी, आज के राजनीतिक तथा सामाजिक बनावट में पिछड़े वर्ग के अगड़े गरीबों के हक को हड़प नहीं लेंगे, इसकी संभावना कम दिखती है। जब तक कानून व्यवस्था को न्यायपूर्ण नहीं बनाया जाता है और जालसाजी कर पिछड़ा होने का प्रमाणपत्र प्रस्तुत करनेवालों के लिए कड़े तथा द्रुत सजा की व्यवस्था नहीं की जाती है, तबतक गरीबों तक सामाजिक न्याय को पहुँचाने में सफलता नहीं मिल सकती। ऐसी स्थिति में आरक्षण एक ब्राह्मणवादी व्यवस्था के स्थान पर दूसरे नवब्राह्मणवाद को जन्म देने का कारक बनकर रह जायगा।

हाल के वर्षों में भारत में सामाजिक न्याय को व्यवस्था देने और लोगों का जीवन-स्तर उन्नत बनाने के कार्यों का विस्तार हुआ है। इसके लिए आरक्षण एक सशक्त प्रावधान के रूप में सामने आया है, लेकिन आरक्षण की सीमा सरकारी नौकरियों तक जाकर खत्म हो जाती है। अतः, सम्पूर्ण समाज के लिए सामाजिक न्याय की स्थापना के लक्ष्यों को प्राप्त करने में आरक्षण की भूमिका सीमित है। जबतक आर्थिक प्रगति द्वारा प्राप्त सुविधाओं का समुचित वितरण तथा न्यायोचित उपभोग की व्यवस्था नहीं की जाती तबतक सामाजिक न्याय को सुनिश्चित नहीं बनाया जा सकता है।

(vi) आतंकवाद

आज हमारा देश राष्ट्रीय स्तर पर जिन बहुविध समस्याओं से प्रपीड़ित है, उसमें आतंकवाद की समस्या सबसे विषैली, जहरीली और भयावह है। यह देश के आर्थिक, सामाजिक पहलुओं को नेस्तनाबूद करते हुए चेतना को विलुप्त करने पर तुला है। आतंकवाद के काले कारनामों से चर्चित समाचार पत्र के पन्ने रंगे होते हैं। यत्रतत्र सर्वत्र इसकी चर्चा लोग किया करते हैं परन्तु इसका निदान ढूँढ पाने में हम सारे देश के नेताओं, प्रशासकों और सम्बद्ध अधिकारियों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इसने हमारे सामाजिक जन-जीवन को संत्रस्त बनाते

हुए उसके आर्थिक मेरूदण्ड को झकझोर कर रख दिया है। फलतः हमारे राष्ट्र के सम्मुख एक गंभीर संकट की घड़ी उत्पन्न हो गयी है।

हालाँकि इस समस्या ने प्रारम्भ में हमारे देश के एक प्रांत पंजाब के ही केवल अपनी लपटों से घेर रखा था, परन्तु अब इसकी चिनगारियाँ दिल्ली एवं हरियाणा जैसे निकटवर्ती प्रान्तों के अतिरिक्त जम्मू-कश्मीर और असम जैसे दूरवर्ती प्रांतों पर भी पड़े बिना नहीं है। जैसी स्थिति कुछ एक वर्षों से बनी हुई है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि कहीं न सम्पूर्ण भारत इसकी अग्निदाह से घिर जाय। यों तो इस समस्या का बीजारोपण 1990 के आम चुनाव के बाद पंजाब के कुछ एक उग्रवादियों की धार्मिक कट्टरता, धर्मान्धता और गलत धारणाओं की आधार-भूमि पर ही हुआ, परन्तु पंजाब के कुछ एक-एक राजनीतिक नेताओं ने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए धर्म को राजनीति से जोड़कर कुछ मथफिरे युवकों को अपनी ओर आकृष्ट करते हुए गलत राजनीतिक सिद्धियाँ प्राप्त करनी चाहीं। तदर्थ सिक्खों के गुरुद्वारों को उन सबों ने अपनी केन्द्रस्थली और कार्यस्थल बनाया। फिर पंजाब के लोगों की भावना को गलत दिशा देकर दिग्भ्रमित किया जाना प्रारम्भ हुआ। फलतः आन्दोलन को प्रोत्साहन मिला और हत्या, खूनखराबा की राजनीति के माध्यम से खालिस्तान की स्थापना की माँग बढ़ी। अमृतसर का पवित्र स्वर्ण मंदिर आतंकवादियों की शरणस्थली, सैन्य-संगठन केन्द्र और शस्त्रागार में परिवर्तित हुआ। फलतः तत्कालीन प्रधानमंत्री, श्रीमती इन्दिरा गाँधी को सेनाओं द्वारा 'ब्लू ऑपरेशन' का अभियान कराकर आतंकवादियों को स्वर्ण मंदिर परिसर से बाहर निकलवाना पड़ा और इनकी प्रतिक्रिया में उन उग्रवादियों द्वारा गोली का शिकार होकर राष्ट्र की बलिवेदी पर अपना प्राणोत्सर्ग करना पड़ा। जनरल वैद्य और लोगोंवाल भी इसी उग्रवाद के शिकार हुए। अब तक हजारों लोगों की जानें इसके चलते जा चुकी है और स्थिति यहाँ तक पहुँच गयी है कि इलाज ज्यों-ज्यों होता गया मर्ज त्यों-त्यों बढ़ता गया।

यह समस्या आज भयावह स्थिति में देश के सामने है। पड़ोसी देश पाकिस्तान को दुर्भावनापूर्ण नीति के चलते आतंकवादियों को हर तरह का सहयोग और शस्त्र मिल रहा है। आतंकवादियों द्वारा पुनः स्वर्ण मंदिर पर अधिकार जमा लिया गया। धार्मिक पोंगे पंथी ग्रंथियों की उनके सामने एक न चली। ये लोग भी इन आतंकवादियों की दया कृपा पर अवलम्बित रहने लगे। प्रान्त में जन-प्रतिनिधि सरकार का खात्मा हो गया और राष्ट्रपति शासन कायम हो गया। सामाजिक ढाँचा विश्रृंखल हो गया है। लोग घर के भीतर भी सुरक्षित नहीं हैं। कब कौन आकर दोस्त बनकर उन्हें बुलाये और पूरे परिवार को गोलियों से भून देगा और सड़क पर जा रही बसों से लोगों को उतारकर सामूहिक हत्यायें कर दी जा रही है। शादी-विवाह या किसी ऐसे ही सामाजिक-पारिवारिक उत्सव पर दो चार उग्रवादियों द्वारा सैकड़ों की जानें ली जा रही हैं। हत्या और खून करने की एक ऐसी अनोखी विधियाँ अपनायी जा रही है। टेपरिकार्डर तथा ट्रांजिस्टर में विस्फोटक तत्वों को भरकर जान लेने की धोखाधरी का तरीका अपनाया जा रहा है। मानवीय भावना का विकास स्वार्थ सिद्धि के लिए पागलपन पर उतरे हुए हैं। तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गाँधी के प्रयास से 'ब्लेडथंडर ऑपरेशन' के द्वारा पुनः स्वर्ण मंदिर परिसर से आतंकवादियों को निकाला गया है। सरकार आतंकवाद की समस्या के समूल नाश के लिए काफी प्रयत्नशील और चिन्तित है। परन्तु केवल सरकार के द्वारा इस समस्या का समाधान संभव नहीं है। पूरे राष्ट्र के बुद्धिजीवियों को इस पर गौर करना होगा और पारस्परिक विचार विनिमय द्वारा इसके सर्वनाश का मार्ग ढूँढना होगा।

हर हालत में इस राष्ट्रीय समस्या पर हम सबको काबू पाना है। सरकार को भी सख्त-से-सख्त अनुशासनिक कार्रवाई करते हुए प्रशासनिक चुस्ती लानी होगी। सामाजिक क्षेत्रीयता और प्रान्तीयता की संकुचित भावना पर कुठाराघात करना होगा, अन्यथा राष्ट्रीयता का मूलोच्छेदन निश्चित है। फिर धर्म को राजनीति से पूर्णतया अलग करना होगा। धार्मिक स्थलों का उपयोग केवल धार्मिक उद्देश्य से ही करना होगा। लोग पूजा-पाठ एवं धर्माचरण हेतु ही केवल मठ-मंदिर, मस्जिद और गिरजाघर में जायें इसपर पूरी पाबन्दी रखनी होगी। धार्मिक नेताओं को राजनीति से दूर रहना होगा। दलगत सदस्यता ऐसे लोगों को नहीं दी जानी चाहिए। आपस के विचार विनिमय द्वारा हर तरह के सामाजिक, आर्थिक और साम्प्रदायिक पहलुओं पर होनेवाली विसंगतियों को राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित कर इसका निदान ढूँढना होगा। तभी समस्या का समाधान संभव है।

2. (i) प्रस्तुत पंक्तियाँ जगदीशचन्द्र माथुर लिखित 'ओ सदानीरा' शीर्षक पाठ से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों में लेखक के कहने का अभिप्राय यह है कि एक तरफ मनुष्य जंगल काटे जा रहा है; खेतों, पशु-पक्षियों आदि को नष्ट कर रहा है। नदियों पर बाँध बनाकर उसे नष्ट कर रहा है तो दूसरी ओर धर्मान्ध मानव गंगा को मइया कहता है पर अपने घर की नाली, कूड़ा-करकट, पूजन-सामग्री जो प्रदूषण ही फैलाते हैं, गंगा नदी में प्रवाहित करता है। इस प्रकार दोनों इस प्रकृति को नष्ट करने में लगे हुए हैं। अतः कहा जा सकता है कि वसुंधराभोगी मानव और धर्मांध मानव एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

(ii) अर्द्धनारीश्वर की कल्पना से इस बात के संकेत है कि नर-नारी पूर्ण रूप से समान हैं एवं उनमें से एक के गुण दूसरे के दोष नहीं हो सकते। दिनकर पाते हैं कि यह दृष्टि रवीन्द्रनाथ के पास नहीं है। वे नारी के गुण यदि पुरुष में आएँ तो उसको दोष मानते हैं। नारियों की कोमलता ही शोभा देती है। वे कहते हैं कि

नारी यदि नारी हय
की होइवे कर्म-कीर्ति, वीर्यबल, शिक्षा-दीक्षा तार ?

अर्थात् नारी की सार्थकता उसकी भंगिमा के मोहक और आकर्षक होने में है, केवल पृथ्वी की शोभा, केवल आलोक, केवल प्रेम की प्रतिमा बनने में हैं। कर्मकीर्ति, वीर्यबल और शिक्षा-दीक्षा लेकर वह क्या करेगी ? प्रेमचन्द ने कहा है कि "पुरुष जब नारी के गुण लेता है तब वह देवता बन जाता है, किंतु नारी जब नर के गुण सीखती है तब वह राक्षसी हो जाती है।"

(iii) गुणगान मुहम्मद कवि का एक ही नेत्र था। किन्तु फिर भी उनकी कवि-वाणी में वह प्रभाव था कि जिसमें भी सुनी वही विमुग्ध हो गया। जिस प्रकार विधाता ने संसार में सदोष, किन्तु प्रभायुक्त चन्द्रमा को बनाया है, उसी प्रकार जायसी जी की कीर्ति उज्जवल थी किन्तु उनमें अंग-भंग दोष था। जायसी जी समदर्शी थे क्योंकि उन्होंने संसार को सदैव एक ही आँख से देखा। उनका वह नेत्र अन्य मनुष्यों के नेत्रों से उसी प्रकार अपेक्षाकृत तेज युक्त था। जिस प्रकार कि तारागण के बीच में उदित हुआ शुक्रतारा।

(iv) प्रस्तुत गद्यांश प्रसिद्ध कवयित्री 'सुभद्रा कुमारी चौहान' द्वारा रचित उनकी कविता 'पुत्र वियोग' से उद्धृत है जो उनके प्रतिनिधि काव्य संकलन 'मुकुल' में संकलित है। कवयित्री की यह रचना एक शोकगीत है।

यह शोकगीत पुत्र के असामयिक निधन के बाद कवयित्री माँ द्वारा लिखा गया है, जिसमें पुत्र निधन के बाद पीछे तड़पते रह गए माँ के हृदय के दारुण शोक की मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी अभिव्यक्ति है। यह विषादमय शोक गहरा होता हुआ भाव उत्कटता प्राप्त करता जाता है।

पुत्र वियोग में तड़पती माँ कहती है कि इस असह्य कष्ट को उसका हृदय तड़प-तड़पकर सह रहा है। उसे पुत्र की मृत्यु के बाद से पल भर के लिए शान्ति नहीं मिल सकी है। एक विवश माँ यह भी जानती है कि उसका जो अनमोल धन (पुत्र) खो गया है, उसे वह वापस नहीं पा सकती है। इस बात में जरा भी संदेह की गुजाइश नहीं है।

3. सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय
केंद्रीय उच्च विद्यालय
पटना

विषय : छात्रवृत्ति प्राप्त करने हेतु

श्रीमान्जी,

सविनय निवेदन यह है कि आपके विद्यालय में दशम ए का छात्र हूँ। मेरा अब तक पढ़ाई का रिकॉर्ड अच्छा रहा है। गत वर्ष मैंने 90 अंक प्राप्त किए थे। पढ़ाई के साथ-साथ भाषण प्रतियोगिता में भी अग्रणी रहा हूँ।

मान्यवर, इस वर्ष मेरे पिताजी अस्वस्थ हो गए हैं जिसके कारण उनका व्यवसाय ठप्प हो गया है। घर की आर्थिक दशा कमजोर हो गई है। मेरे पिताजी मेरी पढ़ाई का खर्च वहन करने में समर्थ नहीं हैं। अतः आपसे निवेदन है कि मुझे इस वर्ष 500 रु० मासिक की छात्रवृत्ति प्रदान करें ताकि मेरी पढ़ाई चलती रहे। इस सहयोग और कृपा के लिए मैं आपका कृतघ्न रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी छात्र
मनोहर

अथवा

सेवा में,

माननीय विद्युत एवं ऊर्जा मंत्री महोदय,

बिहार सरकार, पटना।

विषय– बिजली की कमी को दूर करने हेतु।

मान्यवर महोदय,

मैं बिहार के पूर्णिया क्षेत्र का निवासी हूँ। खेद का विषय है कि इस क्षेत्र में मात्र दो-तीन घंटे के लिए बिजली आती है। परिणामत: न तो खेती का काम हो पाता है और न उद्योग-धंधे ही चल पाते हैं। वैसे तो सम्पूर्ण राज्य में बिजली की किल्लत है, क्योंकि विद्युत आपूर्ति उस मात्रा में नहीं हो पाती जितनी माँग है, किन्तु पूर्णिया क्षेत्र में तो बस नाममात्र की ही आपूर्ति हो रही है।

मेरा सुझाव है निवेदित है कि पूर्णिया जिले के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में कम-से-कम 8 घण्टे और नगरीय क्षेत्रों में 12 घंटे नियमित बिजली देने की व्यवस्था कर दी जाए। तभी इस क्षेत्र के लोगों का आर्थिक पिछड़ापन दूर हो सकेगा।

विश्वास है कि आप मेरे अनुरोध को स्वीकार कर पूर्णिया क्षेत्र में विद्युत आपूर्ति की समुचित व्यवस्था करने का आदेश अपने अधीनस्थ अधिकारियों को प्रदान करेंगे।

धन्यवाद सहित।

भवदीय

दिनांक : 20.03.201... सोहन सिंह

4. (i) तटस्थ प्रजा उत्सव मना रही है। ऐसा राज्यादेश है। प्रजा अंधानुकरण और गैर-जवाबदेही का शिकार है।

(ii) शहीद भगत सिंह भारत के महानतम स्वतंत्रता-सेनानी, क्रांतिकारी और विचारक थे। उन्होंने अपने विचारों द्वारा भारतीय समाज को एक नयी दिशा देने की कोशिश की। किसी समाज अथवा देश को पहचानने के लिए उस समाज अथवा देश के साहित्य से परिचित होना बेहद जरूरी है क्योंकि समाज के प्राणों की चेतना उस समाज के साहित्य में भी प्रतिच्छवित हुआ करती है।

(iii) इस संसार में नर और नारी दोनों का जीवनोद्देश्य एक है। परन्तु पुरुषों ने अन्याय से अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए मनमाने विस्तार का क्षेत्र अधिकृत कर लिया है। जीवन की प्रत्येक बड़ी घटना आज केवल पुरुष-प्रवृत्ति से संचालित होती हुई दिखाई देती है। इसीलिए उसमें कर्कशता अधिक और कोमलता कम दिखाई देती है। यदि इस नियंत्रण और संचालन में नारियों का हाथ हो तो मानवीय संबंधों में कोमलता की वृद्धि अवश्य होगी। जीवन यज्ञ में उसका भी अपना हिस्सा है और वह हिस्सा घर तक ही सीमित नहीं बाहर भी है। आज नारियों को हर क्षेत्र में कार्य मिल रहा है और उसे वे बड़ी समझदारी से उतनी ही मजबूती के साथ करती हैं जितने कि पुरुष। यदि पुरुष अपना वर्चश्ववादी रवैया कम करें तो यह संभव है। इस प्रकृति के द्वारा इनमें कोई विभेद नहीं किया गया है तो हम कौन होते हैं उनका विभेद करनेवाले। अत: पुरुष जिसे अपना कर्मक्षेत्र मानता है वह नारियों का भी कर्मक्षेत्र है।

(iv) लेखक मलयज के अनुसार सुरक्षा डायरी में नहीं, बल्कि सूरज के पूर्ण प्रकाश में है। अंधेरे में तो पल भर की धुक-धुकी के साथ छुपा जा सकता है। किन्तु लड़ने, पिसने, खटने और चुनौती को स्वीकारने में ही वास्तविक जीवन है। पलायन व स्वयं को बचाने में जीवन की सुरक्षा नहीं बल्कि साहस के साथ चुनौती को स्वीकार कर पूर्ण संघर्षरत प्रकाशित जीवन जीने में ही सुरक्षा माननी चाहिये, लेखक का अभिमत भी ऐसा ही है।

(v) सड़कों को इसलिए सींचा जा रहा है कि राजा अपने छत्र चँवर के साथ गाजे वाजे के साथ आ रहे हैं। कहीं धूल न उड़े इसलिए सड़कों को सींचा जा रहा है।

(vi) हे माता ! कभी अवसर हो तो कुछ करुणा की बात छोड़कर श्रीरामचन्द्रजी को मेरी भी याद दिला देना (इसी से मेरा काम बन जायेगा) यों कहना कि एक अत्यन्त दीन, सर्वसाधनों से हीन, मनमलीन, दुर्बल और पूरा पानी मनुष्य आपकी दास (तुलसी) का दास कहलाकर और आपका नाम ले-लेकर पेट भरता है। इस पर प्रभु कृपा करके पूछे कि वह कौन है तो मेरा नाम और मेरी दशा उन्हें बता देना। कृपालु रामचन्द्रजी के इतना सुन लेने से ही मेरी सारी बिगड़ी बात बन जायेगी। हे जगजननी जानकी जी ! यदि इस दास की अपने इस प्रकार वचनों से ही सहायता कर दी तो यह तुलसीदास आपके स्वामी की गुणावली गाकर भवसागर से तर जायेगा।

(vii) महाकवि जायसी ने अपनी एक आँख की तुलना दर्पण से इसलिए की है कि दर्पण जिस प्रकार स्वच्छ और निर्मल होता है, ठीक उसी प्रकार कवि की आँख है। कोई भी व्यक्ति अपनी छवि जिस प्रकार साफ एवं स्पष्ट रूप से दर्पण में देख पाता है, ठीक उसी प्रकार कवि की आँख भी स्वच्छता और पारदर्शिता का प्रतीक है। एक आँख से अंधे होकर भी कवि काव्य-प्रतिमा से युक्त है, अत: वह पूजनीय है, वंदनीय है। कवि अपनी निर्मल वाणी द्वारा सारे जनमानस को प्रभावित करता है जिसके कारण सभी लोग कवि की प्रशंसा करते हैं और नमन करते हैं। जैसी छवि वैसा ही प्रतिबिंब दर्पण में उभरता है। ठीक उसी प्रकार कवि की निर्मलता और लोक कल्याणकारी भावना उनकी कविताओं में दृष्टिगत होती है।

(viii) अपना गुणगान कराना अहम् (1990) का मुख्य हिस्सा है। इससे व्यक्ति में अधिनायकवाद एवं तानाशाही प्रवृति आती है। सत्ताधारी वर्ग की प्रच्छन्न लालसा है कि जनता उसकी जय-जय करे।

(ix) सुभद्रा कुमारी चौहान मुख्यत: कवयित्री थीं। उनकी कविताओं में दो प्रवृत्तियाँ विशेष रूप से महत्त्व की हैं—पहली तो राष्ट्रीय भावना की और दूसरी घरेलू जीवन की। आपकी राष्ट्रीय कविताओं में समसामयिक देश-प्रेम और भारतीय इतिहास एवं संस्कृति की गहरी छाप है। सुभद्रा जी ने अपनी राष्ट्रीय रचनाओं में जिस प्रतिभा के साथ सांस्कृतिक और राष्ट्रीय भावनाओं को समसामयिक राजनीतिक जीवन के तात्कालिक सन्दर्भ से जोड़ा था, उससे उनकी प्रतिभा का विशेष परिचय मिलता है।

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म सन् 16 अगस्त, 1904 ई० को प्रयाग के निहालपुर मुहल्ले में हुआ था। उनका विद्यार्थी जीवन प्रयाग में ही बीता। कास्थवेट गर्ल्स कॉलेज से आपने शिक्षा प्राप्त करने के बाद नवलपुर के सुप्रसिद्ध वकील डॉ० लक्ष्मण सिंह के साथ आपका विवाह हो गया। आपकी रुचि साहित्य में बाल्यकाल से ही था। प्रथम काव्य रचना आपने 15 वर्ष की आयु में ही लिखीं थीं। राष्ट्रीय आन्दोलन में बराबर सक्रिय भाग लेती रहीं। कई बार जेल गयी। काफी दिनों तक मध्यप्रांत असेम्बली की कांग्रेस सदस्या रहीं और साहित्य एवं राजनीतिक जीवन में समान रूप से भाग लेकर अन्त तक देश की एक जागरूक नारी के रूप में अपना कर्त्तव्य निभाती रहीं। 1948 ई० में अप्रैल में आपका स्वर्गवास हो गया।

सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्यों की मुख्य विशेषण उनकी काव्यशैली है। किसी भी जटिल से जटिल भाव को सम्पूर्ण सरलता के साथ रखती थीं। भाव और अभिव्यक्ति, दोनों को एक-दूसरे में ऐसा पिरोकर रखती थीं कि कहीं भी उनकी शैली में राष्ट्रीय भावना आरोप के समान नहीं लगती। बुन्देलखण्ड में लोक-शैली में गाये जाने वाले छन्द को लेकर उसी में 'झाँसी की रानी' जैसी रोमांचक कथा लिखना उनकी प्रतिभा और दृष्टि दोनों का परिचय देता है।

राष्ट्रीय आन्दोलन के दिनों में यद्यपि 'झाँसी की रानी' काव्य को अंग्रेजी सरकार ने जब्त कर लिया था फिर भी हिन्दी भाषी जनता को कण्ठाग्र हो गया था। 'शैशव के सुन्दर प्रभात का मैंने नव विकास देखा, यौवन की मादक लाली में यौवन का हुलास देखा' आदि कविताओं से हमें यह स्पष्ट पता चलता है कि सुभद्रा जी में गम्भीर-से-गम्भीर विषय को भी सरल रूप में प्रस्तुत करने की अद्भुत क्षमता थी। लेकिन इस सरलता में सुभद्राजी की रचनाएँ अपनी सरसता नहीं खोतीं। भावव्यंजक सरलता और हृदयस्पर्शी सरसता दोनों के योग से वह अपनी रचनाओं को बड़ी मधुर बना देती थीं। उनकी कविताओं का संकलन 'त्रिधारा' और 'मुकुल' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है।

काव्य के अतिरिक्त सुभद्रा जी ने कहानियाँ भी लिखीं हैं। कहानियों में भी वही सरल शैली और जीवन के मधुरतम भावुक क्षणों का मानवीय चित्रण है। इनके कहानी संग्रह हैं—विखरे मोती और उन्मादिनी।

सुभद्रा जी की भाषा बोलचाल की भाषा है और शिल्प भी अत्यन्त सहज और सुलभ पक्षों का समर्थन करता हुआ चलता है। नारी हृदय की कोमलता

और उसके मार्मिक भाव-पक्षों को नितान्त स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत करना सुभद्रा जी की शैली का आधार है। प्रस्तुत कविता सुभद्रा जी के प्रतिनिधि काव्य संकलन 'मुकुल' से ली गई है जो निराला की 'सरोज स्मृति' के बाद हिन्दी में एक दूसरा शोक गीत है जो पुत्र के असामयिक निधन के बाद कवयित्री माँ द्वारा लिखी गई।

(x) धाँगड़ शब्द का अर्थ ओराँव भाषा में है-भाड़े का मजदूर।

धाँगड़ एक आदिवासी जाति है, जिसे 18वीं शताब्दी के अंत में नील की खेती के सिलसिले में दक्षिण बिहार के छोटानागपुर पठार से चंपारण के इलाके में लाया गया था। धाँगड़ जाति आदिवासी जातियों-ओराँव, मुंडा, लोहार इत्यादि के वंशज हैं, लेकिन ये अपने आप को आदिवासी नहीं मानते हैं। धाँगड़ मिश्रित ओराँव भाषा में बात करते हैं। धाँगड़ों का सामाजिक जीवन बेहद उल्लासपूर्ण है, स्त्री-पुरुष ढलती शाम के मंद प्रकाश में सामूहिक नृत्य करते हैं।

5. (i) कहानी के पहले भाग में मालती द्वारा अपने भाई के औपचारिक स्वागत का उल्लेख है जिसमें कोई उत्साह नहीं है, बल्कि कर्त्तव्यपालक की औपचारिकता अधिक है। वह अतिथि का कुशलक्षेम तक नहीं पूछती, पर पंखा अवश्य झलती है। उसके प्रश्नों का संक्षिप्त उत्तर देती है। बचपन की बातूनी चंचल लड़की शादी के दो वर्षों बाद इतनी बदल जाती है कि वह चुप रहने लगती है। उसका व्यक्तित्व बुझ-सा गया है। अतिथि का आना उस घर के ऊपर कोई काली छाया मँडराती हुई लगती है।

मालती और अतिथि के बीच के मौन को मालती का बच्चा सोते-सोते रोने से तोड़ता है। वह बच्चे को सँभालने के कर्तव्य का पालन करने के लिए दूसरे कमरे में चली जाती है। अतिथि एक तीखा प्रश्न पूछता है तो उसका उत्तर वह एक प्रश्नवाचक 'हूँ' से देती है। मानो उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं है। यह आचरण उसकी उदासी, ऊबाहट और यांत्रिक जीवन की यंत्रणा को प्रकट करता है। दो वर्षों के वैवाहिक जीवन के बाद नारी कितनी बदल जाती है, यह कहानी के इस भाग में प्रकट हो जाती है। कहानी के इस भाग में मालती कर्त्तव्यपालन की औपचारिकता पूरी करती प्रतीत होती है पर उस कर्त्तव्यपालन में कोई उत्साह नहीं है, जिससे उसके नीरस, उदास, यांत्रिक जीवन की ओर संकेत करता है। अतिथि से हुए उसके संवादों में भी एक उत्साहहीनता और ठंढापन है। उसका व्यवहार उसकी द्वन्द्वग्रस्त मनोदशा का सूचक है। इस प्रकार कहानीकार बाह्य स्थिति और मनःस्थित के संश्लिष्ट अंकन में सफल हुआ है।

रोज कहानी के दूसरे भाग में मालती का अंतर्द्वन्द्वग्रस्त मानसिक स्थिति, बीते बचपन की स्मृतियों में खोने से एक असंज्ञा की स्थिति, शारीरिक जड़ता और थकान का कुशल अंकन हुआ है। साथ ही उसके पति के यांत्रिक जीवन, पानी, सब्जी, नौकर आदि के अभावों का भी उल्लेख हुआ है। मालती पति के खाने के बाद द्रोपहर को तीन बजे और रात को दस बजे ही भोजन करेगी और यह रोज का क्रम है। बच्चे का रोना, मालती का देर से भोजन करना, पानी का नियमित रूप से वक्त पर न आना, पति का सवेरे डिस्पेन्सरी जाकर दोपहर को लौटना और शाम को फिर डिस्पेन्सरी में रोगियों को देखना, यह सबकुछ मालती के जीवन में रोज एक जैसा ही है। घंटा खड़कने पर समय की गिनती करना मालती के नीरस जीवन की सूचना देता है अथवा यह बताता है कि समय काटना उसके लिए कठिन हो रहा है।

इस भाग में मालती, महेश्वर, अतिथि के बहुत कम क्रियाकलापों और अत्यंत संक्षिप्त संवादों के अंकन से पात्रों की बदलती मानसिक स्थितियों को प्रस्तुत किया गया है, जिससे यही लगता है कि लेखक का ध्यान बाह्य दृश्य के वजाए अंतर्दृश्य पर अधिक है।

कहानी के तीसरे भाग में महेश्वर की यांत्रिक दिनचर्या, अस्पताल के एक जैसे ढर्रे, रोगियों की टांग काटने या उसके मरने के नित्य चिकित्सा-कर्म का पता चलता है, पर अज्ञेय का ध्यान मालती के जीवन-संघर्ष को चित्रित करने पर केंद्रित है।

महेश्वर और अतिथि बाहर पलंग पर बैठ कर गपशप करते रहे और चाँदनी रात का आनन्द लेते रहे, पर मालती घर के अंदर वर्तन माँजती रही, क्योंकि यही उसकी नियति थी।

बच्चे का बार-बार पलंग से नीचे गिर पड़ना और उस पर मालती की चिड़चिड़ी प्रतिक्रिया मानो पूछती है वह बच्चे को सँभाले या बर्त्तन मले ? यह काम नारी को ही क्यों करना पड़ता है ? क्या यही उसकी नियति है ?

इस अचानक प्रकट होने वाली जीवनेच्छा के बावजूद कहानी का मुख्य स्वर चुनौती के बजाए समझौते का और मालती की सहनशीलता का है। इसमें नारी जीवन की विषम स्थितियों का कुशल अंकन हुआ है। बच्चे की चोटें भी मामूली बात है, क्योंकि उसे चोटें रोज लगती हैं। मालती के मन पर लगने वाली चोटें भी चिन्ता का विषय नहीं है, क्योंकि वह रोज इन चोटों को सहती रहती है। 'रोज' की ध्वनि कहानी में निरन्तर गूँजती रहती है।

कहानी का अंत 'ग्यारह' बजने की घंटा-ध्वनि से होता है और तब मालती करुण स्वर में कहती है ''ग्यारह बज गए''। उसका घंटा गिनना उसके जीवन की निराशा और करुण स्थिति को प्रकट करता है।

कहानी एक रोचक मोड़ पर वहाँ पहुँचती है, जहाँ महेश्वर अपनी पत्नी को आम धोकर लाने का आदेश देता है। आम एक अखबार के टुकड़े में लिपटे हैं। जब वह अखबार का टुकड़ा देखती है, तो उसे पढ़ने में तल्लीन हो जाती है। उसके घर में अखबार का भी अभाव है। वह अखबार के लिए भी तरसती है। इसलिए अखबार का टुकड़ा हाथ में आने पर वह उसे पढ़ने में तल्लीन हो जाती है। यह इस बात का सूचक है कि अपनी सीमित दुनिया से बाहर निकल कर वह उसके आस-पास की व्यापक दुनिया से जुड़ना चाहती है। जीवन की जड़ता के बीच भी उसमें कुछ जिज्ञासा बनी है, जो उसकी जिजीविषा की सूचक है। मालती की जिजीविषा के लक्षण कहानी में यदा-कदा प्रकट होते हैं, पर कहानी का मुख्य स्वर चुनौती का नहीं है, बल्कि समझौते और परिस्थितियों के प्रति सहनशीलता का है जो उसके मूल में उसकी पति के प्रतिनिष्ठा और कर्त्तव्यपरायणता को अभिव्यक्त करता है। वह भी परंपरागत सोच की शिकार है, जो इसमें विश्वास करती है कि यह उसके जीवन का सच है। इससे इतर वह सोच भी नहीं सकती। जिस प्रकार से समाज के सरोकारों से वह कटी हुई है, उसे रोज का अखबार तक हासिल नहीं है, जिससे अपने ऊबाउपन जीवन से दो क्षण निकालकर बाहर की दुनिया में क्या कुछ घटित हो रहा है, उससे जुड़ने का मौका मिल सके। ऐसी स्थिति में एक आम महिला से अपने अस्तित्व के प्रति चिंतित होकर सोचते, उसके लिए संघर्ष करने अथवा उबाउ जीवन से उबरने हेतु जीवन में कुछ परिवर्तन लाने की उम्मीद ही नहीं बचती।

(ii) रवीन्द्रनाथ, जयशंकर प्रसाद एवं प्रेमचंद के चिंतन नारियों के प्रति भिन्न रहे हैं। इन कवियों और रोमांटिक चिंतकों में नारी का जो रूप प्रकट हुआ वह भी उसका अर्द्धनारीश्वरी रूप नहीं है।

प्रेमचन्द ने कहा है कि ''पुरुष जब नारी के गुण लेता है तब वह देवता बन जाता है; किन्तु नारी जब नर के गुण सीखती है तब वह राक्षसी हो जाती है।''

इसी प्रकार जयशंकर प्रसादजी की इड़ा के विषय में यह कहा जाय कि इड़ा वह नारी है जिसने पुरुषों के गुण सीखे हैं तो निष्कर्ष यही निकलेगा कि प्रसादजी भी नारी को पुरुषों के क्षेत्र से अलग रखना चाहते थे।

कवि रवीन्द्रनाथ ने भी नारियों के बारे में कुछ ऐसे ही विचार दिये हैं। उनके अनुसार नारी की सार्थकता उसकी भंगिमा के मोहक और आकर्षक होने में है, केवल पृथ्वी की शोभा, केवल आलोक, केवल प्रेम की प्रतिमा बनने में है। कर्मकीर्ति, वीर्यबल और शिक्षा-दीक्षा लेकर वह क्या करेगी ?

परन्तु राष्ट्रकवि दिनकर उक्त कवियों एवं लेखकों के विचार से असंतुष्ट हैं। उनका मानना है कि नारियाँ अब अभिशप्त नहीं हैं। यतियों का अभिशप्त काल समाप्त हो गया है। अब नारी विकारों की खान और पुरुषों की बाधा नहीं मानी जाती है। अब नारी प्रेरणा का उद्‌गम है, शक्ति का स्रोत है। अब वह पुरुषों की थकान की महौषधि बन गई है। अतः नारी और नर एक ही द्रव की ढली दो प्रतिमाएँ हैं। वे एक दूसरे की पूरक हैं। प्रारम्भिक काल में दोनों बहुत कुछ समान थे। आज भी वैसा ही होना चाहिए।

(iii) सूर के काव्य के तीन प्रधान विषय हैं—विनय भक्ति, वात्सल्य और प्रेम शृंगार। इन्हीं तीन भाव-वृत्तों में उनका काव्य सीमित है। उसमें जीवन का व्यापक और बहुरूपी विस्तार नहीं है, किन्तु भावों की ऐसी गहराई और तल्लीनता है कि व्यापकता और विस्तार पीछे छूट जाते हैं। वात्सल्य के सूर ही विश्व

में अद्वितीय कवि हैं। बालक की प्रकृति का इतना स्वाभाविक वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है। बाल स्वभाव के बहुरंगी आयाम का सफल एवं स्वाभाविक चित्रण उनके काव्य की विशेषता है। बालक की बाल सुलभ प्रकृति- उसका रोना, मचलना, रूठना, जिद करना आदि प्रवृत्तियों को उन्होंने अपने काव्य में बड़े मनोवैज्ञानिक ढंग से सजाया है।

पाठ्य-पुस्तक से संकलित पदों में सूरदासजी ने वात्सल्य रस की अनेक विशेषताओं का वर्णन किया है। बालक कृष्ण सोए हुए हैं, भोर हो गई है। उन्हें दुलार से जगाया जा रहा है। जगाने के स्वर भी मधुर है। चहचहाते पक्षियों के, कमल के फूलों के, बोलती और दौड़ती हुई गायों के उदाहरण देकर बालक कृष्ण को जगाने का प्रयास किया जा रहा है।

दूसरे पद में भी वात्सल्य रस की सहज अभिव्यक्ति के क्रम में अनेक विशेषताओं को निरूपित किया गया है। नंद बाबा की गोद में बालक कृष्ण भोजन कर रहे हैं। कुछ खा रहे हैं, कुछ धरती पर गिरा रहे हैं। बालक कृष्ण को मना-मनाकर खिलाया जा रहा है। विविध प्रकार के व्यंजन दिए जा रहे हैं। यहाँ पर वात्सल्य रस अपने चरम उत्कर्ष पेर है। सूरदासजी लिखते हैं-

''जो रस नंद-जसोदा विलसत, सो नहिं विहुँ भुवनियाँ।''

(iv) ''हँसते हुए अकेलापन'' शीर्षक डायरी मलयज की एक उत्कृष्ट रचना है। मलयज अत्यंन्त आत्मसजग किस्म के बौद्धिक व्यक्ति थे। डायरी लिखना मलयज के लिए जीवन जीने के कार्य जैसा था। ये डायरी मलयज के समय की उथल-पुथल और उनके निजी जीवन की तक़लीफों बेचैनियों के साथ एक गहरा रिश्ता बनाते हैं। इस डायरी में एक औसत भारतीय लेखक के परिवेश को हम उसकी समस्त जटिलताओं में देख सकते हैं।

पाठ्य पुस्तक में प्रस्तुत डायरी के अंश की प्रथम डायरी में मलयज ने प्रकृति एवं मानव के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है। मिलिट्री की छावनी में वृक्ष काटे जा रहे हैं। लेखक वृक्षों के एक गिरोह में उनकी एकात्मकता का संकेत देता है।

दूसरे दिन की डायरी में लेखक ने मनुष्य के जीवन की तुलना खेती की फसलों से की है। मनुष्य का जीवन फसल के समान बढ़ता, पकता एवं कटता दिखायी देता है। तीसरे दिन की डायरी में लेखक ने चिट्ठी की उम्मीद में और चिट्ठी नहीं आने पर अपनी मनोदशा का वर्णन किया है। चिट्ठी नहीं आनेपर एक अजीब-सी बेचैनी मन में आती है।

चौथे दिन की डायरी में लेखक ने लेखक बलभद्र ठाकुर नामक एक लेखक का चित्रण किया है और बताने का प्रयास किया है कि एक लेखक कितना सरल एवं मिलनसार होता है। अपनी रचनाओं पर लेखक को गर्व होता है, उसका सहज चित्र इस डायरी में प्रस्तुत है। कौसानी में कुछ दिनों तक लेखक का प्रवास बड़ा ही आनंददायक रहा। दो शिक्षकों का चित्रण उनके सहज एवं सामाजिक स्वभाव को दिखाया गया है। पाँचवीं डायरी में भी लेखक ने कौसानी के प्राकृतिक एवं शांत वातावरण का चित्रण किया है।

छठी डायरी में मलयज ने एक सेब बेचने वाली किशोरी का चित्रण बड़ी ही कुशलतापूर्वक किया है। किशोरी इतनी भोली थी कि सेब बेचने में उसका भोलापन परिलक्षित होता है। सातवीं डायरी में मलयज यथार्थवादी दिखायी देते हैं। उनके अनुसार मनुष्य यथार्थ को रचता भी है और यथार्थ में जीता भी है। उनके अनुसार रचा हुआ यथार्थ भोगे हुए यथार्थ से अलग है। बाल-बच्चे रचे हुए यथार्थ हैं। वे सांसारिक वस्तुओं का भोग करते हैं। उनके अनुसार रचने और भोगने का रिश्ता एक द्वंद्वात्मक रिश्ता है।

आठवीं डायरी लेखक ने शब्द एवं अर्थ के बीच निकटता का वर्णन किया है। लेखक का कहना है शब्द अधिक होने पर अर्थ कमने लगता है और अर्थ की अधिकता में शब्दों की कमी होने लगती है। अर्थात् शब्द अर्थ में और अर्थ शब्द में बदलते चले जाते हैं।

नवीं डायरी में लेखक ने सुरक्षा पर अपना विचार व्यक्त किया है। व्यक्ति की सुरक्षा रोशनी में हो सकती है, अंधेरे में नहीं। अंधेरे में सिर्फ छिपा जा सकता है। सुरक्षा तो चुनौती को झेलने में ही है, बेचैनी में नहीं। अत: आक्रामक व्यक्ति ही अपनी सुरक्षा कर सकता है। बचाव करने में व्यक्ति असुरक्षित होता है।

दसवीं डायरी में लेखक ने रचना और दस्तावेज में भेद एवं दोनों में पारस्परिक संबंध की चर्चा की है। लेखक के अनुसार दस्तावेज रचना का कच्चा माल है। दस्तावेज रचनारूपी करेंसी के वास्तविक मूल्य प्रदान करने वाला मूलधन है।

ग्यारहवीं डायरी में लेखक ने मन में पैदा होने वाले डर का वर्णन किया है। लेखक अपने को भीतर से डरा हुआ व्यक्ति मानता है। मन का डर तनाव पैदा करता है, संशय पैदा करता है। किसी की प्रतीक्षा की घड़ी बीत जाने पर मन में डर पैदा होता है। डर कई प्रकार के होते हैं। मनुष्य जैसे-जैसे जीवनरूपी समस्याओं से घिरता जाता है, उसके मन में डर की मात्रा भी बढ़ती जाती है।

अंतिम डायरी में लेखक ने जीवन में तनाव के प्रभाव का वर्णन किया है। मनुष्य जीवन में संघर्षों का सामना करते समय तनाव से भरा रहता है।

इस प्रकार प्रस्तुत डायरी के अंश में मलयज ने अपने जीवन के संघर्षों एवं दु:खों की ओर इशारा करते हुए मानव जीवन में पाये जाने वाले सहज समस्याओं का चित्रण बड़ी ही कुशलता से किया है। एक व्यक्ति को कितना खुला, ईमानदार और विचारशील होना चाहिए-इस भाव का सहज चित्रण लेखक ने अपनी डायरी में प्रस्तुत किया है। व्यक्ति के क्या दायित्व हैं और अपने दायित्वों के प्रति कैसा लगाव, कैसी सन्निध्यता होनी चाहिए-ये सारे भाव प्रस्तुत डायरी में स्पष्ट रूप से चित्रित हैं।

(v) ज्ञानेन्द्रपति समकालीन कवि हैं। वे नवापूंजीवाद और आर्थिक उदारवादी के कारण ग्रामीण संस्कृति में जो बहुआयामी बदलाव आया है उस संस्कृति को नष्ट हुआ देख दुखी होते हैं। उन्होंने जो बचपन के दिन गुजारे हैं वह स्मृतियों में बस जाता है। इसलिए वे गाँव का घर याद करते हैं। कवि घर के अंत:पुर की चौखट याद करता है वह देखता है कि घर के चौखट से पार होकर जैसे ही बाहर निकलता है तो बदलाव देखकर क्षुब्ध होता है। वह तरह-तरह के उपमाओं द्वारा कहता है कि जिस घर के भीतर खाँस कर आना पड़ता था अर्थात् घर नयी कन्याओं के आने पर बुजुर्ग लोग घर में प्रवेश करने से पहले खाँसते हैं, खड़ाऊ खटकाते हैं या रुककर पुकारते हैं यह सब नयी संस्कृति के प्रभाव से नष्ट हो रहा है। कवि अपनी इस परम्परा को खोना नहीं चाहता है। इसलिए गाँव का घर बराबर उसकी स्मृतियों में आते हैं। उस गाँव में जब भी कोई लड़ाई-झगड़ा होती थी तो लोग पंच परमेश्वर बनाकर उसका निदान करते थे परंतु अब अदालतों का चक्कर काटना पड़ता है। यही नहीं अब लालटेन का प्रकाश नहीं दीखता बल्कि बिजली आ गयी है। बेटे के विवाह के दहेज में टीवी माँगने लगे हैं। अब लोकगीतों की धुन कम सुनाई पड़ती है उसकी जगह मदमस्त आर्केस्ट्रा ने ले ली है। उस लोकसंस्कृति में कहाँ होरी-चैता विरहा-आल्हा गूँजते थे अब वह शोकगीत के समान लगता है। पहले सर्कस दिखाए जाते थे अब वह मानों कहीं खो गया है। गाँव की संस्कृति वैसी प्रतीत होती है जैसे हाथी का गजदंत नहीं हो। हाथी का सौन्दर्य उसके दाँत होते हैं। दाँत के बिछुड़ने पर वह दन्तविहीन हो जाता है उसी प्रकार गाँव का सौन्दर्य उसकी लोक संस्कृति है। वह उन्हीं गजदंतों के समान टूट गया। कवि शहर की चकाचौंध में देखता है कि लोग बीमारी के कारण अस्पतालों में और लड़ाई झगड़े के कारण अदालतों का चक्कर काट रहे हैं। गाँव के घर की रीढ़ इनसे काँप उठती है। अर्थात ग्रामीण संस्कृति को चोट पहुँचता है।

(vi) हेनरी लोपेज द्वारा लिखित कहानी ''पेशगी'' में तथाकथित सभ्य समाज द्वारा शोषण एवं उत्पीड़न का अत्यन्त स्वाभाविक एवं संवेदनशील चित्रण है। कहानी 'पेशगी' अफ्रीकी देश कांगों के सामाजिक जीवन की विसंगति पर प्रकाश डालती है। संभ्रान्त और फ्रांसीसी परिवार से इनका संबंध है। उस परिवार में कारमेन नामक एक अफ्रीकी मूल की नौकरानी काम करती है। मालकिन की एक नन्हीं-सी पुत्री ''फ्रैंक्वा'' है जो अपनी माँ के दुलार में कुछ जिद्दी एवं चिड़चिड़ी हो गई है। कारमेन उसको बहुत प्यार करती है तथा उसे हमेशा खुश देखना चाहती है। दिनभर उसकी छोटी लड़की फ्रैंक्वा की देखभाल में कारमेन का समय बीतता है। इसके अतिरिक्त उस बंगले के अन्य कार्य भी उसे करने पड़ते हैं। फ्रैंक्वा अक्सर मचल जाती है किसी बात पर अड़ जाती है। उस समय नौकरानी कभी-कभी डाँटकर तथा कभी स्नेह तथा ममतापूर्ण शब्दों से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए समझाती है, क्योंकि बच्ची के प्रति उसका वात्सल्य उमड़ पड़ता है। अपने बेटा हेक्टर के समान ही वह फ्रैंक्वा को मानती है। कारमेन को अपने गाँव माकेलेकेले बंगले पर पहुँचाने में एक घंटा से अधिक

समय लग जाता था। लेकिन जब तक फ्रैंक्वा सो नहीं जाती थी तब तक वह उसे लोरी सुनाकर घुमाती रहती थी। चाहे रात अधिक भी बीत जाए अपने घर लौटने के लिए। मालकिन कभी-कभी नाराज होकर कुछ कटु शब्द बोल दिया करती थी। कारमेन कभी गैर-हाजिर नहीं होती, उसे भय रहता है कि यदि वह अनुपस्थित हुई तो नौकरी से निकाल दी जाएगी। इस आशय की चेतावनी मैडम उसे दे चुकी है।

6. (i) सफल होने के लिए मनुष्य के जीवन का एक उद्देश्य होना चाहिए। उद्देश्य अनेक प्रकार के हो सकते हैं। जैसे–धन, आनंद, विद्या आदि। किन्तु तुम्हारा उद्देश्य मात्र देश को सेवा होनी चाहिए।

(ii) मनुष्य को स्वयं उसकी सहायता ही सफल बनाती है। अधिक लोगों में अगर यह पाया जाए तो इससे राष्ट्रीय प्रगति एवं राष्ट्रीय दृढ़ता का आधार बन जाता है। आत्मसम्मान भी एक श्रेष्ठ भाव है। इससे चारित्रिक विकास होता है और ख्याति प्राप्त होती है।